

पद ८८ (हिंदी)

(राग: मांड जोगिया - ताल: धुमाळी)

या मुख से हरनाम ले बे मूरख मनुवा ॥ध्रु.॥ या मुख से हरनाम
कहते रहना । कुबुद्धि वासना छोड़ दे बे मूरख ॥१॥ फिर
पछतावेगा हाथ नहीं आवेगा । मनुख जनम अवतार तोहे बे ॥२॥
माणिक कहे समज मन मूरख । फिर पछतावेगा सुन सुन रावे
बे ॥३॥